प्राथमिक अंग्रेज़ी

पठन कौशल का विकास और अनुश्रवण

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को विद्यालय की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्रा–छात्राओं के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)* / मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण2.0 EE13v2
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई उन संसाधनों और अभ्यासों के बारे में है, जिनसे आपके छात्र–छात्राओं को अंग्रेज़ी में ऊँची आवाज़ में पढ़ने और मौन रहकर पढ़ने के मुख्य कौशल विकसित करने में, तथा बोलकर पढ़ने से मौन रहकर पढ़ने की ओर परिवर्तन में मदद मिलती है।

जब आप अपने छात्र–छात्राओं को अंग्रेज़ी में बोलकर पढ़ते हुए सुनते हैं, तो आप उनकी पठन क्षमता का निरीक्षण कर सकते हैं। बोलकर पढ़ने से छात्र–छात्राओं को अपने उच्चारण का अभ्यास करने और अंग्रेज़ी के उपयोग में आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिलती है।

मौन रहकर पढ़ना छात्र–छात्राओं के लिहाज से काफी उन्नत कौशल है, भले ही वे अपनी पहली भाषा में पढ़ रहे हों या दूसरी भाषा में। आमतौर पर इसका विकास तब होता है, जब उन्हें कुछ पढ़कर सुनाया जाता है और आगे चलकर वे किसी और के साथ बोलकर पढ़ते हैं। इसलिए मौन रहकर पढ़ना एक ऐसा लक्ष्य है, जिसे पूरा करने के लिए काम करना चाहिए क्योंकि इससे छात्र–छात्रा अधिक परिपक्व और स्वतंत्र पाठक बनते हैं।

यह इकाई आपको बताएगी कि सक्षमता समूहों में निर्देशित पठन के लिए छात्र–छात्राओं को किस प्रकार व्यवस्थित किया जाए। यह आपके लिए एक नया विचार हो सकता है, या आप निर्देशित पठन के पहलुओं का पहले से उपयोग कर रहे हो सकते हैं। आप पठन को प्रोत्साहित करने और इसका अनुश्रवण करने के एक संसाधन के रूप में रीडिंग कार्डों को देखेंगे।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- छात्रा–छात्राओं को ज़ोर से अंग्रेज़ी पढ़ने के कौशल को विकसित करना।
- छात्रा–छात्राओं के अंग्रेज़ी मौन पठन के कौशल को विकसित करना।
- अंग्रेज़ी में निर्देशित पठन को व्यवस्थित करना।

1 अपने छात्र–छात्राओं के साथ अंग्रेज़ी ज़ोर से पढ़ने को विकसित करना

इस बारे में बातचीत के साथ शुरुआत करें कि आप अंग्रेज़ी पाठकों के रूप में छात्र–छात्राओं को विकसित करने के लिए अब क्या करते हैं।

गतिविधि 1: अपनी पठन दिनचर्या की ऑडिट करें

अपनी कक्षा को अंग्रेज़ी में ऊंची आवाज़ में केवल पढ़कर ही सुनाना आपके लिए महत्वपूर्ण नहीं है – आपके छात्र–छात्राओं को भी ऐसा करने का अवसर मिलना चाहिए।

अपनी खुद की कक्षाओं के बारे में सोचें। आप निम्नलिखित गतिविधियाँ कितनी बार करते हैं – कभी नहीं, कभी-कभी या अक्सर?

सारणी 1: आप गतिविधियाँ कितनी बार करते हैं?

गतिविधि	कभी नहीं	कभी-कभी	अक्सर
मैं पाठ्यपुस्तक में या बोर्ड पर लिखा हुआ ऊंची आवाज़ में पढ़ता/पढ़ती हूँ। छात्र–छात्रा मौन रहकर मेरे साथ पढ़ते हैं।			
मैं पाठ्यपुस्तक में या बोर्ड पर लिखा हुआ ऊंची आवाज़ में पढ़ता/पढ़ती हूँ। छात्र–छात्रा मेरे बाद तुरंत दोहराते हैं।			

	मैं पाठ्यपुस्तक में या बोर्ड पर लिखा हुआ ऊंची आवाज़ में पढ़ता/पढ़ती हूँ। छात्र–छात्रा मेरे साथ ऊंची आवाज़ में बोलकर पढ़ते हैं।			

गतिविधि	कभी नहीं	कभी-कभी	अक्सर
छात्र–छात्रा अपनी क्षमता के अनुसार छोटे समूहों में ऊँची आवाज़ में पढ़ते हैं, जिन्हें मैं सुनता/सुनती हूँ, जबकि शेष कक्षा चुपचाप काम करती है।			
मैं छात्र–छात्राओं को ऊंची आवाज़ में पढ़ने के लिए बुलाता/बुलाती हूँ और पूरी कक्षा सुनती है।			
मैं छात्र–छात्राओं से कोई पाठ चुपचाप पढ़ने को कहता/कहती हूँ और मैं उनका अवलोकन करता/करती हूँ।			
मैं छात्र–छात्राओं से कोई पाठ चुपचाप पढ़ने को कहता/कहती हूँ और मैं उन्हें इस बारे में सवाल पूछता / पूछती हूँ।			

ये सभी प्रभावी विधियाँ हैं और अपनी कक्षा की पठन दिनचर्या में बारी-बारी से इनका उपयोग करना एक अच्छा अभ्यास है। लेकिन छात्र–छात्राओं को अंग्रेज़ी बोलने का मौका जितना ज्यादा मिलेगा, उतना ही बेहतर होगा। इसलिए ऊंची आवाज़ में पढ़ना और छात्र–छात्राओं से भी ऊंची आवाज़ में पढ़ने को कहना एक बहुत अच्छा अभ्यास है – वे आपके साथ या आपके तुरंत बाद बोलकर पढ़ सकते हैं या आप केवल उन्हें सुन भी सकते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थिति में, आप छात्र–छात्राओं के पठन कौशल को देख सकते हैं और उसका मूल्यांकन कर सकते हैं।

आप किन दिनचर्याओं का उपयोग सबसे ज्यादा करते हैं? एक शिक्षक के रूप में आपके लिए और अंग्रेज़ी सीखने वालों के रूप में आपके छात्र–छात्राओं के लिए इन दिनचर्याओं के क्या लाभ हैं?

अब उन दिनचर्याओं को देखें, जिनका आप उपयोग नहीं करते हैं या बहुत कम करते हैं। एक शिक्षक के रूप में, इन अभ्यासों को कार्यान्वित करने में आपके लिए क्या चुनौतियाँ हैं? यह आत्मविश्वास की बात है, संसाधनों की बात है या कक्षा के आकार की बात है? इस इकाई की गतिविधियों और संसाधनों का मकसद कक्षा में आपकी पठन दिनचर्याओं का विस्तार करने के लिए आपका आत्मविश्वास विकसित करना है।

2 आपके छात्र–छात्राओं से ऊँची आवाज़ में पढ़वाना

आगे दिए गए केस स्टडी में, एक शिक्षक छात्र–छात्राओं के पठन का निरीक्षण और मूल्यांकन करने के लिए कदम उठाते हैं।

केस स्टडी 1: श्री गोविंद छात्र–छात्राओं को ऊंची आवाज़ में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं

श्री गोविंद कक्षा पाँच में अंग्रेज़ी के शिक्षक हैं।

हमारी अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक Blossom part-5 में बहुत सारी छोटी कहानियाँ हैं। मैं हमेशा अपने छात्र–छात्राओं को ऊंची आवाज़ में ये कहानियाँ पढ़कर सुनाता था और मेरे छात्र मेरे साथ चुपचाप पढ़ते थे। हालाँकि, जब मैं उनसे प्रश्न पूछता

था, तो कभी-कभी मैंने देखा कि वे कहानी को समझ नहीं पाते थे या उन्हें यह नहीं मालूम होता था कि वह पाठ किस बारे है।

मैं देखना चाहता था कि वे जो पढ़ रहे थे, क्या उसे वे समझते हैं या नहीं। मुझे लगा कि ऐसा करने का एक तरीका यह है कि छात्र–छात्राओं को पाठ्यपुस्तक से ऊंची आवाज़ में पढ़ने को कहा जाय, खासतौर से तब जब हमने पूरी कहानी एक बार साथ में पढ़ ली हो। मैं हर दिन सिर्फ तीन या चार छात्र–छात्राओं को ही बुला पाता था, लेकिन मुझे लगा कि यदि मैं हर दिन ऐसा करूँ, तो हर दो सप्ताह में एक बार ज्यादातर छात्र–छात्राओं की बारी आ जाएगी। इस तरह, उन्हें ऊँची आवाज़ में पढ़ने और दूसरों को ऊँची आवाज़ में पढ़ते हुए सुनने के मौके नियमित रूप से मिलेंगे।

मुझे लगता था कि यदि मैंने अपने छात्र–छात्राओं को अच्छी तरह पढ़ाया है, तो वे ऊंची आवाज़ में पढ़ते समय गलतियाँ नहीं करेंगे। लेकिन मैंने देखा कि जो छात्र–छात्रा गलतियों के बिना पढ़ रहे थे, असल में वे सिर्फ पढ़ने का दिखावा कर रहे थे और रटी हुई कहानी को दोहरा रहे थे। तब मुझे एहसास हुआ कि मैंने उन्हें जो भी पढ़कर सुनाया था, यदि उन्होंने उसे सिर्फ रट लिया है, तो वास्तव में वे कुछ भी नहीं सीख रहे थे। जो छात्र सचमुच पढ़ रहे थे और समझ रहे थे, उनके पढ़ने की गति धीमी थी, वे गलतियाँ करते थे और कुछ शब्दों को पढ़ने में उन्हें कठिनाई होती थी। मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में उन 'गलतियों' से यह पता लग रहा था कि वे लोग सीख रहे थे।

लेकिन छात्र–छात्राओं को गलतियाँ करना अच्छा नहीं लगता, इसलिए जब वे पढ़ते थे, तो मुझे लगातार उन्हें प्रोत्साहित करना और उनकी प्रशंसा करना जारी रखना पड़ता था।

कभी-कभी जब छात्र–छात्राओं को कोई ऐसा शब्द मिलता है, जिसे पढ़ना उनके लिए कठिन है, तो वे इसे छोड़ने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन मैं उन्हें प्रोत्साहित करने की कोशिश करता हूँ कि वे थोड़ा समय देकर उस शब्द को देखें और उसके अर्थ को समझें। जब वे उस शब्द को पढ़कर उसका अर्थ समझ लेते हैं, तो मैं छात्र–छात्राओं से कहता हूँ कि वे उस वाक्य को शुरुआत से दोबारा पढ़ें। कठिन शब्दों और वाक्यांशों को बार-बार पढ़ने का परिणाम यह दिखाई दिया कि छात्र–छात्रा जब ऊँची आवाज़ में पढ़ते थे उनकी गति, सटीकता और अभिव्यक्ति की क्षमता में सुधार हो रहा था। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि छात्र–छात्राओं को रोचक पाठ पढ़ने को मिल सके, ताकि उन्हें बार-बार उसे पढ़ने की प्रेरणा मिले।

हालांकि, मैंने देखा है कि यदि कोई छात्र/छात्रा कुछ पढ़ते समय बार-बार लड़खड़ाता है, तो उन्हें वह जारी रखने को कहना बेकार है। इसलिए मैं खुद के लिए यह नोट कर लेता हूँ कि इस छात्र/छात्रा को पढ़ने में आगे और सहायता की ज़रुरत है और अगली बार मैं उन्हें पढ़ने के लिए ज्यादा सरल पाठ देता हूँ। इसके बाद जब भी संभव हो, मैं उनके साथ अकेले बैठकर भी पढ़ाने का प्रयास करता हूँ। मैंने देखा है कि यदि छात्र–छात्राओं को ऐसे पाठ पढ़ने को दिए जाएँ, जिनके ज्यादातर शब्दों और वाक्यांशों से वे परिचित हैं, तो उनकी पढ़ने की क्षमताओं में सुधार होने की संभावना सबसे ज्यादा होती है।

ज़रा सोचिए

- अंग्रेज़ी में छात्र–छात्राओं की पढ़ने की समझ का मूल्यांकन करने की श्री गोंविद की विधियाँ कौन-सी हैं?
- वे कम सक्षम पाठकों की सहायता किस प्रकार करते हैं?
- क्या आप श्री गोविंद की इस बात से सहमत हैं कि जब ऊंची आवाज़ में पढ़ते समय कोई छात्र–छात्रा गलतियाँ करता है, तो इसका अर्थ है कि सीखना जारी है? क्यों या क्यों नहीं?
- श्री गोविंद ने इस बात का ज़िक्र किया है कि छात्र–छात्राओं की प्रशंसा करना और उन्हें प्रोत्साहित करना कितना महत्वपूर्ण है। आप अपनी कक्षाओं में यह कैसे करते हैं?

अगली गतिविधि में, ऊंची आवाज़ में अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए आपके छात्र–छात्राओं के कौशल को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

गतिविधि 2: छात्र जब ऊँची आवाज़ में पढ़ते हैं, तब उन्हें सुनें

30–मिनट के एक सत्र की योजना बनाएँ, जिसमें आपके छात्र–छात्रा बारी-बारी से आपको ऊंची आवाज़ में अंग्रेज़ी में पढ़कर सुनाएँ।

- एक समान क्षमताओं वाले छात्र–छात्राओं (छः से ज्यादा नहीं) का एक छोटा समूह चुनें।
- पाठ्यपुस्तक का एक अंश चुनकर उन्हें पढ़ने के लिए दें – वे उससे अच्छी तरह परिचित होने चाहिए।
- यह सुनिश्चित करें कि हर छात्र के पास एक-एक पाठ्यपुस्तक है या वे सभी उस पाठ को देख सकते हैं।
- शेष कक्षा को कोई ऐसा काम दें, जिसे मौन रहकर किया जा सके।
- कक्षा में कोई ऐसी जगह चुनें, जहाँ आप छात्र–छात्राओं के इस छोटे समूह के साथ बैठ सकें।
- यह नियम बनाएँ कि आपको और आपके समूह को कोई परेशान न करे।
- कक्षा को यह बताएँ कि हर छात्र को एक छोटे समूह में आपके साथ बैठकर ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाने का मौका मिलेगा।

चित्र 1: ऊँची आवाज़ में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को सुनना।

एक छोटे समूह के साथ बैठें। उन्हें समझाएँ कि हर छात्र आपको ऊंची आवाज़ में एक अनुच्छेद पढ़कर सुनाएगा ताकि आप उनके पठन को सुन सकें और प्रोत्साहित कर सकें। छः छात्र–छात्राओं को पाठ्य–पुस्तक दें और उन्हें बारी-बारी से एक भाग आपको पढ़कर सुनाने को कहें।

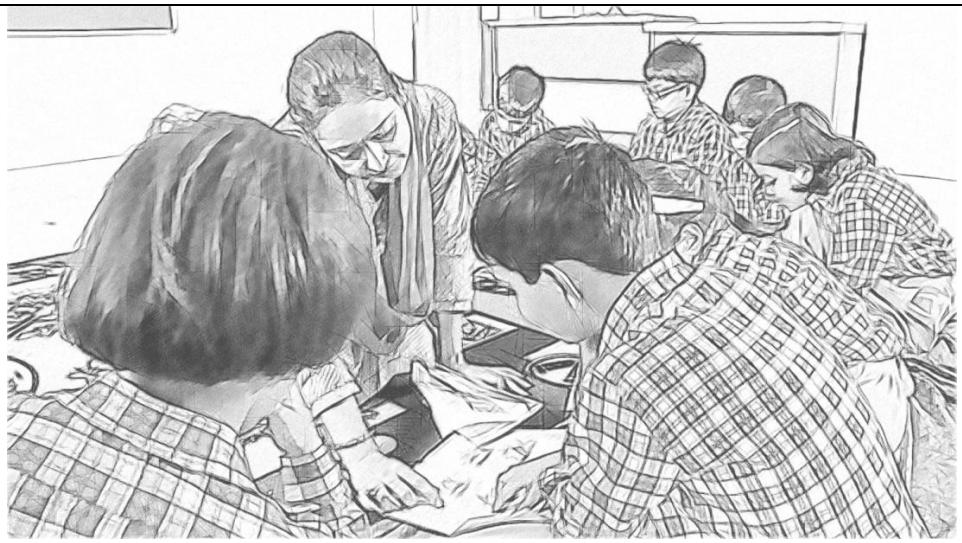

चित्र 2: एक छोटे समूह के साथ समय बिताना।

जब आपके छात्र–छात्रा पढ़ते हैं, तब ध्यान पूर्वक उन्हें सुनें। यदि वे किसी शब्द के बारे में अनिश्चित हैं, तो तुरंत उनकी मदद न करें। उन्हें प्यार से इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि वे उस शब्द या वाक्य को समझने की कोशिश करें। आप उन्हें निम्नलिखित में से कौन-सी रणनीतियों का उपयोग करते हुए देखते हैं?

- शब्दों को आवाज़ से समझना (वर्ण/ध्वनि के ज्ञान का उपयोग करना)
- कहानी या किसी भी संबंधित चित्र का सन्दर्भ लेकर शब्दों का अनुमान लगाना
- किसी परिचित वाक्यांश के कारण अनुमान लगाना कि अगला शब्द कौन-सा होगा
- एक बार में एक शब्द पढ़ना
- इससे जुड़े हुए पाठ और वाक्यांश पढ़ना
- प्रत्येक शब्द की ओर संकेत करना
- अपनी याददाश्त से शब्द पढ़ना
- अपनी याददाश्त से वाक्य पढ़ना
- अनुमान लगाना।

ये सभी किसी नई भाषा में पढ़ने का अभ्यास करने के लिए स्वीकार तरीके हैं। यदि छात्र–छात्रा एक रणनीति का उपयोग कर रहे हैं, तो आप उन्हें शब्दों का अर्थ समझने के दूसरे तरीकों का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप पूछ सकते हैं कि 'इस चित्र में क्या दिखाया गया है?' या 'यह कौन-सा अक्षर है और इसकी ध्वनि कैसी है?'

छात्र–छात्राओं को ऊँची आवाज़ में पढ़ते हुए सुनना उनके आकलन का एक अवसर है। आप यह कैसे तय करते हैं कि छात्र–छात्राओं को आगे कौन-सी पुस्तक या पाठ पढ़ना चाहिए? आपके निर्णय में पठन स्तर कितने महत्वपूर्ण हैं? क्या आप छात्र–छात्राओं की उम्र के बारे में भी सोचते हैं? और कौन-से कारक आपके आकलन को प्रभावित करते हैं?

जब आप छात्र–छात्राओं को ऊँची आवाज़ में बोलते हुए सुनते हैं, तो आप उनकी वाक्पटुता/धाराप्रवाह और उच्चारण का निरीक्षण कर सकते हैं। आप उनसे अवधारणा के प्रश्न पूछ सकते हैं। आप छात्र–छात्राओं से यह भी पूछ सकते हैं कि उन्हें किताब में क्या अच्छा लगा या उन्हें क्या रोचक या मज़ेदार लगा। इससे उन्हें एक आनंददायक तरीके से पठन के बारे में बात करने का समय मिलेगा।

यदि आप हर सप्ताह छात्र–छात्राओं के एक समूह को ऊँची आवाज़ में पढ़ता हुआ सुनते हैं, तो एक माह या छः सप्ताह की अवधि में आप अपनी कक्षा के हर छात्र/छात्रा को ऊंची आवाज़ में पढ़ता हुआ सुनने में सक्षम होंगे। एक चार्ट तैयार करें, जिसमें यह दिखाया गया हो कि हर सप्ताह आपके साथ कौन-सा समूह पढ़ेगा। इसे आपके लिए और छात्र–छात्राओं के प्रत्येक समूह के लिए एक विशेष समय बनाएँ।

छात्र–छात्राओं की प्रगति का मूल्यांकन करने और इसे दर्ज करने की विधियों के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1, 'अनुश्रवण करना और प्रतिक्रिया देना' देखें।

3 मौन रहकर पढ़ने के लिए संसाधन

छात्र–छात्राओं को कक्षा में मौन रहकर पढ़ने के अवसर दिए जाने चाहिए। इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि वे वास्तविक जीवन में इसी तरह पढ़ेंगे। आपके छात्र–छात्राओं को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए तैयार करने के लिए, आप 'रीडिंग कार्ड्स' का उपयोग कर सकते हैं: छोटी पुस्तिकाएं या कार्ड, जिन पर संक्षेप में कोई पाठ या कहानियाँ लिखी होती हैं और कठिनाई के अनुसार उनकी श्रेणियाँ बनाई जाती हैं। आप अलग अलग तरह की अंग्रेज़ी पाठ्य–पुस्तकों से सरल पाठ या कहानियों को कॉपी करके अपने खुद के ग्रेड कार्ड्स तैयार कर सकते हैं। आप पाठ्यपुस्तक में अभ्यास के भाग के रूप में दिए गए कुछ प्रश्न लिख सकते हैं या अपने खुद के प्रश्न बना सकते हैं।

गतिविधि 3: मौन रहकर पढ़ने के लिए रीडिंग कार्ड्स ढूँढना

चित्र 1 में शुरुआती पाठक के लिए एक वर्ड रीडिंग (शब्द पठन) कार्ड का उदाहरण दिखाया गया है। प्रत्येक कार्ड में शब्दों के समूह के लिए चित्र हैं, जिनके अर्थ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और जिनमें एक समान निर्देश हैं। शुरू करते समय, आप अपने छात्र–छात्राओं को उनकी भाषा में निर्देश समझा सकते हैं।

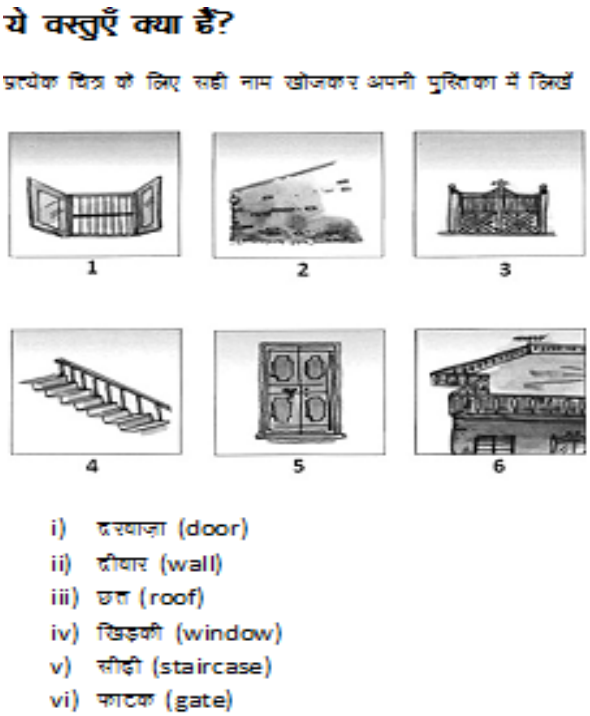

चित्र 3: एक रीडिंग कार्ड का उदाहरण।

चित्र 2 में और दो रीडिंग कार्ड दिखाए गए हैं, इस बार इनमें छोटी कहानियाँ हैं।

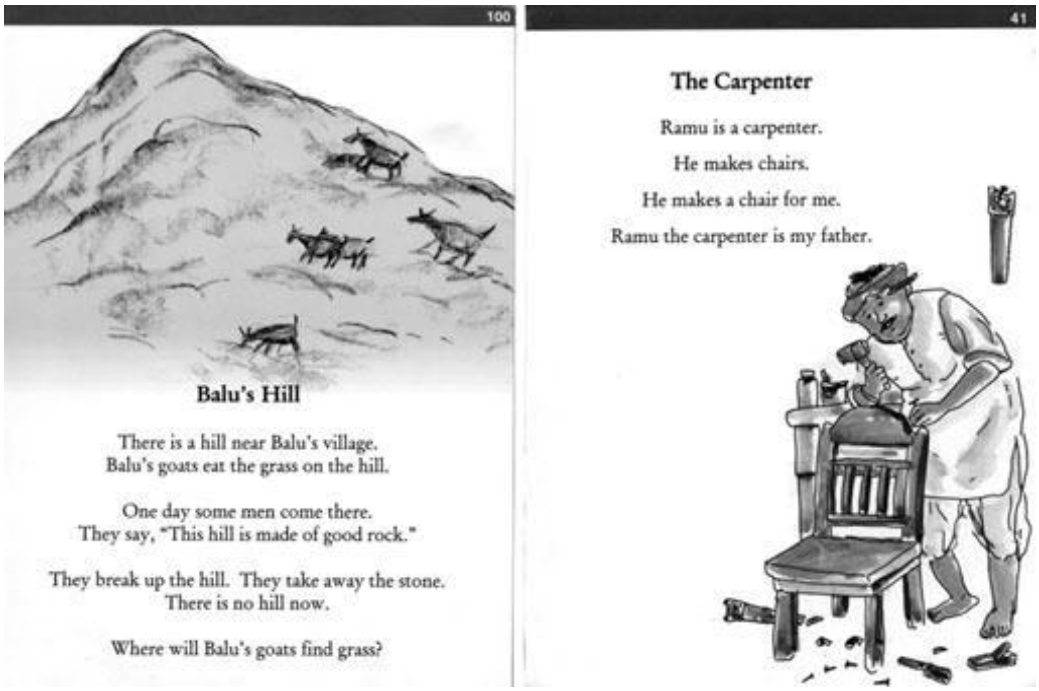

चित्र 4: दो कहानी के कार्ड।

हर कार्ड के पीछे कुछ प्रश्न हैं, जो नीचे दिए गए हैं। आपके अनुसार वे सरल हैं या कठिन हैं? किस कक्षा के छात्र–छात्रा इन कार्डों को पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर खुद देने में सक्षम होंगे?

'Balu's Hill'

Choose the right words:

- Balu's village is near a _____ (hill, river).
- Balu has some _____ (dogs, goats).
- The goats eat _____ (stone, grass).
- The hill is made of _____ (rock, grass).
- The men take away the _____ (grass, stone).

'The Carpenter'

Choose the right words:

- Ramu is a _____ (farmer, carpenter).
- Ramu makes _____ (cars, chairs).
- Ramu makes a _____ (chair, table) for me.
- Ramu is my _____ (mother, father).

क्या आपको रीडिंग कार्डों का उपयोग करने का अनुभव है? यदि ऐसा है, तो आपके अनुसार छात्र–छात्राओं के लिए इनके उपयोग के लाभ और समस्याएँ क्या हैं?

क्या आपके पास रीडिंग कार्ड्स उपलब्ध हैं, लेकिन आपने कक्षा में कभी उनका उपयोग नहीं किया है? आप किस वजह से इनका उपयोग नहीं कर सके हैं?

क्या आपको लगता है कि आप अपने खुद के रीडिंग कार्ड्स बना सकते थे, शायद पाठ्य–पुस्तक के किसी पाठ पर

आधारित? जिन छात्र–छात्राओं को सुधारात्मक कार्य की आवश्यकता है, उनके लिए आप इन्हें कैसे डिज़ाइन करेंगे?

रीडिंग कार्ड्स के द्वारा छात्र कम कठिन कार्ड्स से ज्यादा कठिन कार्ड्स की तरफ बढ़ते समय अपनी खुद की समझ का अनुश्रवण या मूल्यांकन कर सकते हैं। छात्र खुद यह चुन सकते हैं कि उन्हें किस 'स्तर' का कार्ड पढ़ना है: यदि कोई कार्ड बहुत ही सरल है, तो वे अगले कार्ड पर जा सकते हैं; यदि कोई कार्ड बहुत ही कठिन है, तो वे किसी सरल कार्ड पर वापस आ सकते हैं।

गतिविधि 4: रीडिंग कार्ड्स बनाना

रीडिंग कार्ड्स का एक बहुत ही सरल सेट बनाएँ। आप अंग्रेज़ी शब्दावली, एक बहुत छोटी कविता या कहानी, अथवा किसी विषय के लिए तथ्यों का एक सेट चुन सकते हैं (उदाहरण के लिए जानवरों के नाम या शरीर के अंगों के नाम)।

1. कैंची, सख्त कार्ड और गोंद लें।
2. छः कार्ड काटें – इनका आकार पर्याप्त रूप से इतना बड़ा होना चाहिए कि छात्र–छात्रा इन्हें आसानी से पकड़ सकें और पढ़ सकें।
3. शब्दावली या कोई बहुत छोटा-सा पाठ चुनें।
4. कार्ड की एक तरफ वह पाठ लिखें।
5. यदि उचित हो तो चित्र बनाएँ या चिपकाएँ।
6. कार्ड की दूसरी तरफ उस पाठ के बारे में सरल प्रश्न लिखें।

30–मिनट के एक सत्र की योजना बनाएँ, जिसमें आप छात्र–छात्राओं के एक छोटे समूह (छः से ज्यादा नहीं) को ये कार्ड देंगे। उन्हें ये कार्ड पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर उनकी कॉपी में लिखने को कहें।

आप इस समूह को भी उसी समय और उसी तरीके से व्यवस्थित कर सकते हैं, जैसा आपने ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाने वाले छोटे समूह (गतिविधि 2) को किया था। शेष कक्षा को कोई दूसरा काम दिया जाना चाहिए, जिसे वे अकेले चुपचाप कर सकें। कक्षा को बताएँ कि हर किसी को रीडिंग कार्ड के साथ समूह में काम करने का मौका मिलेगा। उन्हें यह समझाएँ कि पाठ छोटे हैं और प्रश्न सरल हैं, इसलिए छात्र खुद ही उन प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम होने चाहिए। यह छात्र–छात्राओं के लिए स्वतंत्र रूप से काम करने का कौशल विकसित करने का एक मौका है।

आप चुपचाप पढ़ने वाले अपने छात्र–छात्राओं का अनुश्रवण और मूल्यांकन करने के लिए यह देख सकते हैं कि दिए गए समय में, वे किस स्तर के, कितने कार्ड पढ़ते हैं और क्या उनके उत्तर सही हैं या नहीं। आप छात्र–छात्राओं की समझ का आकलन करने के लिए अपनी ओर से प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

अगले भाग में, क्षमता समूहों में निर्देशित पठन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। जब आप पढ़ते हैं, तो साथ ही इस बारे में सोचें कि निर्देशित पठन के लिए रीडिंग कार्ड्स का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

4 समूहों में पूरी कक्षा का निर्देशित पठन

निर्देशित पठन में, आप पूरी कक्षा को पठन क्षमता के अनुसार समूहों में व्यवस्थित करते हैं। प्रत्येक समूह के पास अलग-अलग पुस्तकें या पठन कार्ड्स, अथवा उनके पठन स्तर के अनुरूप साझा पुस्तक होती है।

चित्र 5: निर्देशित पठन।

आपको प्रत्येक समूह के साथ समय बिताना होता है, और बारी-बारी से हर छात्र ऊंची आवाज़ में बोलकर पढ़ता है, जिसे आपको सुनना होता है। जब आप एक समूह के साथ काम कर रहे हों, तो अन्य समूहों को स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए।

- क्या आपने कभी ऐसा किया है, या ऐसा होते हुए देखा है?
- आपके अनुसार इस विधि के लाभ क्या हैं? आपके अनुसार इस विधि की हानियाँ क्या हैं?
- अपनी कक्षा को पठन के लिए समूह में रखने के लिए आपको क्या मालूम होना आवश्यक है?

छात्र–छात्रा अलग अलग गति से पढ़ेंगे और अलग अलग समय पर पूरा करेंगे। जब आप छात्र–छात्राओं को समूह में पढ़ने के लिए सेट करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि पढ़ने का काम पूरा हो जाने के बाद करने के लिए उन्हें कोई अतिरिक्त काम दें, जैसे कहानी के पात्रों के चित्र बनाना, वर्कशीट पूरी करना, कहानी का नया अंत लिखना या पुस्तक के लिए नया कवर डिज़ाइन करना। यह अतिरिक्त कार्य एक पुरस्कार के रूप में काम कर सकता है और इससे छात्र–छात्राओं को प्रेरणा मिल सकती है।

संसाधन 2, 'समूह कार्य का उपयोग करना' देखें।

वीडियो: समूहकार्य का उपयोग करना

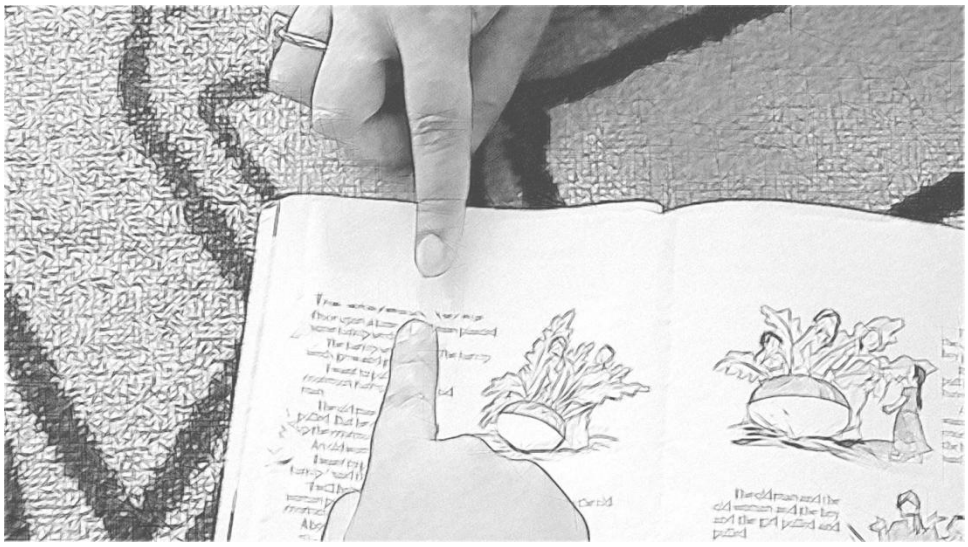

चित्र 6: पठन में छात्र–छात्राओं की मदद करना।

अंतिम केस स्टडी में, एक शिक्षिका एक चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में निर्देशित पठन आयोजित करती हैं।

केस स्टडी 2: श्रीमती मीना निर्देशित पठन समूहों का प्रबंधन करती हैं

श्रीमती मीना कई ग्रेड वाली एक कक्षा को अंग्रेज़ी पढ़ाती हैं, जिसमें कक्षा चार से छः के 46 छात्र हैं, जिनके पठन स्तर अलग अलग हैं। उन्होंने कुल 80 मिनट की अवधि वाले दो घंटियों के लिए एक निर्देशित पठन सत्र की योजना बनाई।

समूहीकरण और संसाधन

पहले मैंने छात्र–छात्राओं को छः समूहों में बिठाया: आठ-आठ छात्र–छात्राओं के पाँच समूह और छः छात्र–छात्राओं का एक समूह। मैंने चार छात्र–छात्राओं की मदद से बैठने की व्यवस्था बनाई, और हर छात्र का नाम पुकारकर उसे एक समूह आवंटित किया। छात्र–छात्राओं को प्रत्येक समूह में आवंटित करते समय, मैंने इस बात को सुनिश्चित करने पर ध्यान दिया कि एक समान पठन क्षमता वाले छात्र एक समूह में रखे जाएं।

एक समूह के छात्र–छात्रा अंग्रेज़ी लगभग पढ़ ही नहीं पाते थे, इसलिए मैंने इस समूह को कक्षा एक की कहानी की एक बड़ी पुस्तक दी। दो समूहों के छात्र–छात्रा काफी हद तक वाक्पटुता के साथ पढ़ सकते थे। इनमें से एक समूह को मैंने एक कहानी की किताब दी, जो मैंने विद्यालय की लाइब्रेरी से ली थी, और दूसरे समूह को मैंने सरल कहानियों का एक संग्रह दिया, जिसका संकलन मैंने अख़बार में बच्चों के पन्ने से। अन्य दो समूहों के छात्र–छात्रा अंग्रेज़ी अक्षरों और ध्वनियों से परिचित थे, और वे कई शब्दों को पहचान सकते थे, इसलिए मैंने उन्हें शब्दों और चित्रों व सरल प्रश्नों वाले रीडिंग कार्ड्स दिए। मैंने ये कार्ड पिछले साल बड़ी उम्र वाले छात्र–छात्राओं की मदद से बनाए थे।

आखिरी समूह के छः छात्र–छात्राओं को विशेष मदद की ज़रुरत थी: एक छात्रा नेत्रहीन थी, दूसरा छात्र डिस्लेक्सिया से ग्रस्त था और चार प्रवासी छात्र–छात्रा थे, जिन्होंने दस दिन पहले ही विद्यालय में प्रवेश लिया था। मैंने नेत्रहीन छात्रा को टेक्टाइल अक्षर दिए, जो मैंने सैंडपेपर से काटे थे। इसकी सलाह मुझे गर्मियों में समावेशक शिक्षा के प्रशिक्षण के दौरान मिली थी। मैंने उसे इन अक्षरों को महसूस करके अनुमान लगाने को कहा कि ये कौन-कौन से अक्षर हैं और उसे बताया कि मैं थोड़ी देर बाद वापस आकर उसकी मदद करुँगी। शेष पाँच छात्र–छात्राओं को मैंने एक बड़ी चित्र-पुस्तिका दी, जिसे पहले मेरा बेटा पढ़ता था, लेकिन अब वह उस लिहाज से बड़ा हो चुका है। मैंने इस समूह से कहा कि वे बारी-बारी से इस चित्र-पुस्तिका को देखें और धीमी-आवाज़ में इस बारे में बात करें कि उन्हें चित्रों में क्या दिखाई दिया। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मैं वापस लौटकर उनकी मदद करुँगी।

अनुश्रवण और आकलन

मैंने छात्र–छात्राओं के तीन समूहों का अवलोकन करने की योजना बनाई थी: दो समूह उन छात्र–छात्राओं के, जिन्हें पढ़ने में कठिनाई हो रही थी और एक समूह वाक्पटु छात्र–छात्राओं का। दो घंटियों की उस 80–मिनटों की अवधि में, यह भी सुनिश्चित करना चाहती थी कि मैं छात्र–छात्राओं के सभी समूहों के साथ समय बिताऊं।

जब छात्र–छात्रा अपने-अपने समूहों में सेट हो गए, तो मैंने लगभग पाँच मिनट में सभी समूहों का निरीक्षण करके यह सुनिश्चित किया कि वे सभी पढ़ रहे थे और समझ गए थे कि उनसे क्या अपेक्षित है। एक बार इस बात की तसल्ली कर लेने के बाद, मैंने प्रत्येक समूह के साथ 10–15 मिनट बिताए और प्रत्येक छात्र से कहानी का एक भाग सुना तथा ऐसा करते समय ज़रुरत के अनुसार उनकी मदद की और प्रश्न पूछकर अनुमान लगाया कि उन्होंने जो पढ़ा है, उसमें से वे कितना समझ सके हैं। ऐसा करते समय, मैंने एक जाँच-सूची का उपयोग किया, जो मैंने प्रत्येक छात्र के लिए पहले ही तैयार कर ली थी और ज़रुरत के अनुसार इसमें संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखीं।

कक्षा प्रबंधन

जब मैं तीसरे समूह तक पहुँची, एक अन्य समूह के दो छात्र शोरगुल करने लगे। पहले समूह के ज्यादातर छात्र–छात्राओं ने अपना पढ़ने का काम पूरा कर लिया था और वे मेरा ध्यान आकृष्ट करने के लिए शोर मचा रहे थे। एक पल के लिए मुझे बहुत घबराहट महसूस हुई। मैंने तीसरे समूह के साथ ज्यादा समय बिताने की योजना बनाई थी क्योंकि वे पढ़ने में कठिनाई महसूस कर रहे थे, हालांकि उन्होंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी। मेरे लिए तुरंत ही कुछ करना ज़रूरी था। मैंने उन दो छात्र–छात्राओं को अलग किया, जो शोर मचा रहे थे और उन्हें दो अलग अलग समूहों में भेजकर दूसरों की मदद करने के लिए कहा और उनसे कहा कि मैं यह देखूंगी कि वे ऐसा कर पाते हैं या नहीं। जिन छात्र–छात्राओं ने पढ़ने का काम पूरा कर लिया था, मैंने उनसे कहा कि वे अपनी कॉपी में कहानी का वर्णन करने वाले चित्र बनाएँ। मैंने दो अन्य छात्र–छात्राओं से कहा कि वे अंतिम समूह को चित्र-पुस्तिका पढ़कर सुनाएँ। यह सब करने के बाद ही मैं तीसरे समूह के साथ अगले 20 मिनट बिताने में सक्षम हो सकी।

इतनी देर में कक्षा के शोर का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा था क्योंकि छात्र–छात्राओं ने या तो पढ़ने का काम पूरा कर लिया था, या वे अशांत हो गए थे। मैंने अपनी गिनने की रणनीति का प्रयास किया; मेरे छात्र–छात्रा जानते हैं कि जब मैं धीरे-धीरे पाँच तक गिनना शुरू करती हूँ, तो उन्हें तुरंत अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाना चाहिए और शोर मचाना बंद कर देना चाहिए। भोजन की छुट्टी के लिए अब सिर्फ पाँच मिनट का समय बचा था। मैंने जल्दी से उन्हें होमवर्क असाइनमेंट दिया कि वे अपने घर के या पड़ोस वाली दुकान से किन्हीं तीन उत्पादों के लेबल पढ़ें और उनकी नकल करके लाएँ। मैंने अंतिम समूह के छः छात्र–छात्राओं को एक तरफ बुलाया और उनसे कहा कि होम असाइनमेंट में वे किन्हीं तीन उत्पादों के चित्र बनाएँ और उनके पहले अक्षर लिखें। मैंने नेत्रहीन छात्रा से कहा कि वह अपनी माँ से तीन उत्पादों के नाम पूछे और अगली कक्षा में वे नाम दोहराए।

मैंने घंटी बजने के बाद तुरंत ही अपनी डायरी में दर्ज कर लिया कि: जिस समूह को लाइब्रेरी की किताबें दी थीं, उनके साथ अगली कक्षा में समय बिताना है, और जिन छात्र–छात्राओं को मैं उस दिन पढ़ते हुए नहीं सुन सकी, उनके नाम भी मैंने दर्ज कर लिए।

ज़रा सोचिए

श्रीमती मीना ने कक्षा की गतिविधियों का एक बहुत जटिल, बहु-स्तरीय सेट ज़्यादा छात्र–छात्राओं वाली एक कक्षा में किया। इसमें बहुत सारी गतिविधियाँ चल रही थीं। इस बारे में बताएँ कि आपकी कक्षा किस प्रकार श्रीमती मीना की कक्षा जैसी या उससे अलग है। इस इकाई को ख़त्म करने के लिए श्रीमती मीना की तकनीकों के बारे में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

- श्रीमती मीना द्वारा उपयोग की गई कुछ कक्षा प्रबंधन गतिविधियाँ क्या हैं?
- क्या आपने पठन और समूह कार्य गतिविधियों के लिए श्रीमती मीना की रणनीतियों में से किसी का उपयोग किया है?

- यदि आप श्रीमती मीना की जगह होते, तो आप क्या काम अलग ढंग से करते? क्यों?
- श्रीमती मीना ने एक बड़ी पुस्तक, लाइब्रेरी की पुस्तकों, रीडिंग कार्ड्स, अखबारों से उन्होंने जो छोटी पुस्तकें बनाई थीं और उनके बेटे की चित्र-पुस्तिका का उपयोग किया। आपके पास ऐसे कौन-से संसाधन हैं, जिनसे आप कक्षा में अपने पठन समूहों को व्यवस्थित कर सकते हैं?
- श्रीमती मीना ने बहुत बड़े छात्र–छात्राओं के लिए भी कक्षा एक की बड़ी पुस्तक का उपयोग किया। क्या आप कक्षा की किसी ऐसी किताब के बारे में सोच सकते हैं, जिसे आप ज्यादा धाराप्रवाह पढ़ने वाले या कम धाराप्रवाह पढ़ने वाले पाठकों को देने के लिए उपयोग कर सकें या अनुकूलित कर सकें?

यदि आपको नहीं लगता कि श्रीमती मीना ने जो किया, वह सब-कुछ आप कर पाने में सक्षम हैं, तो हम आशा करते हैं कि इस इकाई से आपको अपनी कक्षा में अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए नई दिनचर्या और संसाधनों को आज़माने के लिए कुछ विचार और प्रोत्साहन मिला होगा।

5 सारांश

इस इकाई में आपने अंग्रेज़ी में पठन को विकसित करने, इसका अनुश्रवण करने, और बोलकर पढ़ने से मौन रहकर पढ़ने की ओर जाने पर ध्यान केंद्रित किया। आपने संसाधनों के रूप में रीडिंग कार्ड्स देखें और आपने समूह कार्य में पढ़ने की प्रबंधन समस्याओं को देखा। आपने बोलकर पढ़ने और मौन रहकर पढ़ने के आकलन पर भी विचार किया।

कैसे पढ़ा जाए, यह जानने के सबसे बड़े लाभों में से एक यह है कि एक बार इस कौशल में महारत हासिल कर लेने पर, आपके छात्र वह सब-कुछ पढ़ सकते हैं, जो उन्हें रोचक लगे। वे अपनी गति आगे बढ़ते रह सकते हैं और क्या पढ़ा जाए यह जानने के लिए उन्हें शेष कक्षा की या शिक्षक की ज़रुरत नहीं होगी। हम आशा करते हैं कि इस इकाई की गतिविधियों और केस स्टडी से आपको कक्षा में अंग्रेज़ी पढ़ने की अपनी दिनचर्या विकसित करने में मदद मिलेगी।

प्रारंभिक अंग्रेज़ी हेतु इस विषय पर अन्य शिक्षक विकास इकाईयाँ हैं:

- *अंग्रेज़ी के वर्ण और ध्वनियाँ*
- *कथावाचन*
- *साझा पठन*
- *सीखने की योजना बनाना*
- *पठन के माहौल को देना*

संसाधन

संसाधन 1: अनुश्रवण करना और फीडबैक देना

छात्र–छात्राओं का प्रदर्शन सुधारने के लिए सतत् अनुश्रवण करने और उन्हें उत्तर देने की ज़रुरत होती है, ताकि वे जान सकें कि उनसे क्या अपेक्षित है और काम पूरे करने के बाद उन्हें प्रतिक्रिया मिले। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया से वे अपना प्रदर्शन सुधार सकते हैं।

अनुश्रवण करना

प्रभावी शिक्षक अधिकांश समय अपने छात्र–छात्राओं की अनुश्रवण करते हैं। आमतौर पर, ज्यादातर शिक्षक छात्र–छात्राओं की बातें सुनकर और कक्षा में वे क्या कर रहे हैं, इसका अवलोकन करके उनके कार्य का अनुश्रवण करते हैं। छात्र–छात्राओं की प्रगति का अनुश्रवण करना महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उन्हें इन कामों में मदद मिलती है:

- ऊँचे ग्रेड हासिल करना

- अपने प्रदर्शन के बारे में अधिक सजग बनना और अपने सीखने के बारे में ज्यादा ज़िम्मेदार बनना
- अपने शिक्षण में सुधार करना
- प्रादेशिक और स्थानीय मानकीकृत परीक्षाओं में उपलब्धि का पूर्वानुमान लगाना।

एक शिक्षक के रूप में इससे आपको भी यह तय करने में मदद मिलेगी कि:

- कब एक प्रश्न पूछना है या एक संकेत देना है
- कब प्रशंसा करनी है
- कब चुनौती देनी है
- एक कार्य में छात्र–छात्राओं के अलग अलग समूहों को कैसे शामिल करना है
- ग़लतियों के लिए क्या करना है।

जब छात्र–छात्राओं को उनकी प्रगति के बारे में एक स्पष्ट और त्वरित प्रतिक्रिया दी जाती है, तब उनमें सबसे ज्यादा सुधार होता है। अनुश्रवण का उपयोग करने से आप नियमित रूप से प्रतिक्रिया देने में सक्षम होंगे, जिससे आपके छात्र–छात्राओं को यह पता चलेगा कि उनका प्रदर्शन कैसा है और अपने शिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें और क्या करना होगा।

आपको जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, उनमें से एक यह है कि छात्र–छात्राओं की सहायता किस प्रकार की जाए, जिससे वे अपने स्वयं के सीखने के लक्ष्य निर्धारित कर सकें, जिसे स्वतः-निरीक्षण भी कहा जाता है। छात्र–छात्राओं को, खासतौर पर जिन्हें पढ़ने में कठिनाई हो रही है, अपने सीखने का नियंत्रण अपने ही पास रखने की आदत नहीं होती है। लेकिन आप किसी भी छात्र/छात्रा की मदद कर सकते हैं, जिससे वे किसी परियोजना के लिए अपने लक्ष्य या ध्येय खुद तय कर सकें, अपने कार्य की योजना बना सकें और अंतिम तिथियाँ निर्धारित कर सकें तथा अपनी प्रगति का निरीक्षण खुद कर सकें। इस प्रक्रिया का अभ्यास करने और स्वतः निरीक्षण के कौशल पर महारत हासिल करने से उन्हें विद्यालय में और अपने पूरे जीवन में ही बहुत मदद मिलेगी।

छात्र–छात्राओं की बात सुनना और अवलोकन करना

अधिकांशतः शिक्षक स्वाभाविक रूप से छात्र–छात्राओं को सुनते और उनका अवलोकन करते हैं; यह अनुश्रवण करने का एक सरल साधन है। उदाहरण के लिए आप:

- अपने छात्र–छात्राओं को ऊँची आवाज में पढ़ते समय सुन सकते हैं
- जोड़ियों या समूहकार्य में चर्चाओं को सुन सकते हैं
- कक्षा में या बाहर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में छात्र–छात्राओं का अवलोकन कर सकते हैं
- जब समूह कार्य कर रहे हों, तब उनकी देहभाषा (body language) का अवलोकन कर सकते हैं।

सुनिश्चित करें कि आप जो अवलोकन एकत्रित करते हैं, वे छात्र–छात्रा के सीखने या प्रगति के वास्तविक प्रमाण हैं। केवल वही लिखें, जो आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, निर्धारित कर सकते हैं या गिन सकते हैं।

जब छात्र–छात्रा काम कर रहे हों, तब अपनी कक्षा का चक्कर लगाकर अवलोकन की संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें। आप एक कक्षा सूची का उपयोग करके यह दर्ज कर सकते हैं कि किन छात्र–छात्राओं को अधिक मदद की ज़रुरत है और यदि कोई गलतफहमी उभर रही है, तो उसे भी दर्ज कर सकते हैं। आप इन अवलोकनों और टिप्पणियों का उपयोग पूरी कक्षा को प्रतिक्रिया देने या समूहों या व्यक्तियों को आगे बढ़ाने और प्रोत्साहन देने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया देना

प्रतिक्रिया वह जानकारी होती है, जो आप एक छात्र/छात्रा को इस बारे में देते हैं कि एक वर्णित लक्ष्य या अपेक्षित परिणाम के संबंध में उन्होंने कैसा प्रदर्शन किया है। प्रभावी ढंग से दी गई प्रतिक्रिया छात्र–छात्राओं को यह देती है:

- क्या हुआ है इसकी जानकारी

- कोई क्रिया या कार्य कितनी अच्छी तरह किया गया इसका मूल्यांकन
- इस बारे में मार्गदर्शन कि उनका प्रदर्शन किस प्रकार सुधारा जा सकता है।

जब आप प्रत्येक छात्र को प्रतिक्रिया देते हैं, तो इससे उन्हें यह जानने में मदद मिलनी चाहिए कि:

- वे वास्तव में क्या कर सकते हैं
- वे अभी तक क्या नहीं कर सकते
- दूसरों की तुलना में उनका काम कैसा है
- वे इसमें सुधार कैसे कर सकते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभावी ढंग से दी गई प्रतिक्रिया से छात्र–छात्राओं को मदद मिलती है। आप नहीं चाहेंगे कि आपकी प्रतिक्रिया अस्पष्ट या पक्षपाती हो, जिससे छात्र सीखना बंद कर दें। प्रभावी प्रतिक्रिया इस प्रकार की होती है:

- **केंद्रित** उन कामों पर जो किए जा रहे हैं और इस पर कि छात्र–छात्राओं को क्या सीखना होगा
- **स्पष्ट और ईमानदार**, जो छात्र–छात्राओं को यह बताती है कि उनके सीखने के तरीके में क्या अच्छा है और किस्में सुधार ज़रूरी है
- **कार्यवाही के योग्य**, जो छात्र–छात्राओं से कुछ ऐसा करने को कहती है, जिसे वे कर पाने में सक्षम हैं
- इस तरह दी जाती है कि **उसकी भाषा उपयुक्त हो**, ताकि छात्र उसे समझ सकें
- इसे हमेशा **सही समय पर दी जानी चाहिए** – यदि यह बहुत जल्दी दी जाती है, तो छात्र को लगेगा कि 'मैं तो बस ये करने ही वाला था!'; अगर बहुत देर से दी जाती है, तो छात्र का ध्यान कहीं और चला जाएगा और वे वापस जाकर वह नहीं कर सकेंगे, जो करने को कहा गया है।

प्रतिक्रिया चाहे मौखिक हो, या छात्र–छात्राओं की वर्कबुक में लिखकर दी जाए, लेकिन यदि इसके लिए निम्नलिखित दिशार्निदेशों का पालन किया जाता है, तो यह अधिक प्रभावी बन जाती है।

प्रशंसा और सकारात्मक भाषा का उपयोग करना

जब हमारी प्रशंसा की जाती है और हमें प्रोत्साहित किया जाता है तो आमतौर पर हम उस समय के मुकाबले काफी अधिक बेहतर महसूस करते हैं, जबकि हमारी आलोचना की जाती है या हमारी गलती सुधारी जाती है। पुनर्बलन और सकारात्मक भाषा समूची कक्षा और सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक होती है। याद रखें कि प्रशंसा विशिष्ट और कार्य पर लक्षित होनी चाहिए, न कि स्वयं छात्र पर, अन्यथा इससे छात्र को प्रगति में मदद नहीं मिलेगी। 'बहुत बढ़िया' कहना विशिष्ट नहीं है, इसलिए निम्नलिखित में से कुछ कहना बेहतर होता है:

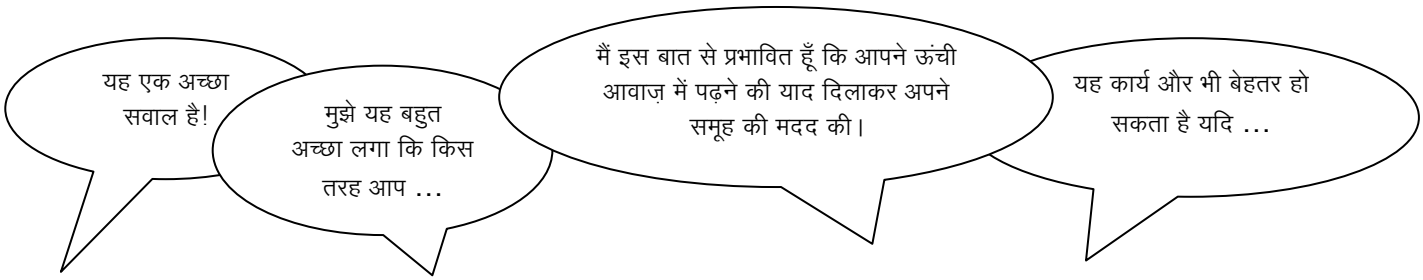

संकेत देने के साथ-साथ सुधार का उपयोग करना

आप अपने छात्र–छात्राओं के साथ जो बातचीत करते हैं, उससे उन्हें सीखने में मदद मिलती है। यदि आप उन्हें बताते हैं कि कोई उत्तर गलत है और आप बात वहीं ख़त्म कर देते हैं, तो आप सोचने और कोशिश करने में उनकी मदद करने का मौका गँवा देंगे। यदि आप छात्र–छात्राओं को कोई संकेत देते हैं और उनसे आगे एक प्रश्न पूछते हैं, तो इससे आप उन्हें ज्यादा गहराई में सोचने के लिए आगे बढ़ाते हैं उन्हें उत्तर ढूँढने तथा उनके खुद के सीखने के लिए ज़िम्मेदारी उठाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उदहारण के लिए, आप इस तरह की बातें बोलकर एक बेहतर उत्तर के लिए प्रोत्साहन दे सकते हैं या समस्या के किसी अलग पहलू की तरफ संकेत दे सकते हैं:

दूसरे छात्र–छात्राओं को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना उपयुक्त हो सकता है। आप इस तरह की टिप्पणियों के साथ अपने सवाल शेष कक्षा के साथ पूछकर यह काम कर सकते हैं:

'हाँ' या 'नहीं' कहकर छात्र–छात्राओं के उत्तर सुधारना स्पेलिंग या संख्या अभ्यास जैसे कार्यों के लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन इसके बावजूद भी यहाँ आप छात्र–छात्राओं को उनके उत्तरों में उभरने वाले पैटर्न देखने, उसी तरह के उत्तरों के साथ संबंध जोड़ने या इस बारे में चर्चा करने के लिए आगे बढ़ा सकते हैं कि कोई विशिष्ट उत्तर क्यों गलत है।

स्वतः सुधार और साथी सुधार प्रभावी होते हैं और आप जोड़ियों में काम कर रहे छात्र–छात्राओं को उनका खुद का काम और दूसरों के काम जाँचने को कहकर उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक बार में एक पहलू को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करना सबसे अच्छा होता है क्योंकि इसमें भ्रमित करने वाली बहुत ज्यादा जानकारी नहीं होती।

संसाधन 2: समूहकार्य का उपयोग करना

समूहकार्य एक व्यवस्थित, सक्रिय, अध्यापन कार्यनीति है जो छात्र–छात्राओं के छोटे समूहों को एक आम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये छोटे समूह संरचित गतिविधियों के माध्यम से अधिक सक्रिय और अधिक प्रभावी शिक्षण को प्रोत्साहित करते हैं।

समूहकार्य के लाभ

समूहकार्य छात्र–छात्राओं को सोचने, संवाद कायम करने, विचारों का आदान-प्रदान करने और निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करके सीखने हेतु उन्हें प्रेरित करने का बहुत ही प्रभावी तरीका हो सकता है। आपके छात्र–छात्रा दूसरों को सिखा सकते हैं और उनसे सीख भी सकते हैं: यह शिक्षण का शक्तिशाली और सक्रिय स्वरूप है।

समूहकार्य में छात्र–छात्राओं का समूहों में बैठना ही काफी नहीं होता है; इसमें स्पष्ट उद्देश्य के साथ सीखने के साझा कार्य पर काम करना और उसमें योगदान करना शामिल होता है। आपको इस बात को लेकर स्पष्ट होना होगा कि आप पढ़ाई के लिए सामूहिक कार्य का उपयोग क्यों कर रहे हैं और जानना होगा कि यह भाषण देने, जोड़े में कार्य या छात्र–छात्राओं के स्वयं से कार्य करने पर तरजीह देने योग्य क्यों है। इस तरह समूहकार्य को सुनियोजित और उद्देश्यपूर्ण होना आवश्यक है।

समूहकार्य का नियोजन करना

आप समूहकार्य का उपयोग कब और कैसे करेंगे यह इस बात पर निर्भर करेगा कि पाठ के अंत में आप कौन सा शिक्षण पूरा करना चाहते हैं। आप समूहकार्य को पाठ के आरंभ में, अंत में या बीच में शामिल कर सकते हैं, लेकिन आपको पर्याप्त समय का प्रावधान करना होगा। आपको उस कार्य के बारे में जो आप अपने छात्र–छात्राओं से पूरा करवाना चाहते हैं और समूहों को नियोजित करने के सर्वोत्तम ढंग के बारे में सोचना होगा।

एक शिक्षक/शिक्षिका के रूप में, आप समूहकार्य की सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं यदि आप निम्न की योजना अग्रिम रूप से बनाते हैं:

- सामूहिक गतिविधि के लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम
- किसी भी फीडबैक या सारांश कार्य सहित, गतिविधि को आवंटित समय
- समूहों को कैसे विभाजित करना है (कितने समूह, प्रत्येक समूह में कितने छात्र, समूहों के लिए मापदंड)
- समूहों को कैसे नियोजित करना है (समूह के विभिन्न सदस्यों की भूमिका, आवश्यक समय, सामग्रियाँ, रिकार्ड करना और रिपोर्ट करना)
- कोई भी आकलन कैसे किया और रिकार्ड किया जाएगा (व्यक्तिगत आकलनों को सामूहिक आकलनों से अलग पहचानने का ध्यान रखें)
- समूहों की गतिविधियों पर आप कैसे अनुश्रवण करेंगे।

समूहकार्य के काम

वह काम जो आप अपने छात्र–छात्राओं को पूरा करने को कहते हैं वह इस पर निर्भर होता है कि आप उन्हें क्या सिखाना चाहते हैं। समूहकार्य में भाग लेकर, वे एक-दूसरे को सुनने, अपने विचारों को समझाने और आपसी सहयोग से काम करने जैसे कौशल सीखेंगे। तथापि, उनके लिए मुख्य लक्ष्य है जो विषय आप पढ़ा रहे हैं उसके बारे में कुछ सीखना। कार्यों के कुछ उदाहरणों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- **प्रस्तुतिकरण:** छात्र–छात्रा समूहों में काम करके शेष कक्षा के लिए प्रस्तुतिकरण बनाते हैं। यह सबसे बढ़िया उपयोगी तब होता है जब प्रत्येक समूह के पास विषय का भिन्न पहलू होता है, जिससे वे एक ही विषय को कई बार सुनने की बजाय एक दूसरे को सुनने के लिए प्रेरित होते हैं। प्रत्येक समूह को प्रस्तुत करने के लिए दिए गए समय के विषय में काफी सख्ती बरतें और अच्छे प्रस्तुतिकरण के लिए मापदंडों का एक सेट निश्चित करें। इन्हें पाठ से पहले बोर्ड पर लिखें। छात्र–छात्रा मापदंडों का उपयोग अपने प्रस्तुतिकरण की योजना बनाने और एक दूसरे के काम का आकलन करने के लिए कर सकते हैं। इन मापदंडों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:
  - क्या प्रस्तुतिकरण स्पष्ट था?
  - क्या प्रस्तुतिकरण सुसंरचित था?
  - क्या मैंने प्रस्तुतिकरण से कुछ सीखा?
  - क्या प्रस्तुतिकरण ने मुझे सोचने पर मजबूर किया?
- **समस्या को हल करना:** छात्र–छात्रा किसी समस्या या समस्याओं की एक शृंखला को हल करने के लिए समूहों में काम करते हैं। इसमें शामिल हो सकता है, विज्ञान का कोई प्रयोग करना, गणित की समस्याएँ हल करना, अंग्रेजी कहानी या कविता का विश्लेषण करना, या इतिहास के सबूत का विश्लेषण करना।

- **कोई कलाकृति या उत्पाद बनाना:** छात्र–छात्रा समूहों में काम करके किसी कहानी, नाटक के भाग, संगीत के अंश, किसी अवधारणा को समझाने के लिए मॉडल, किसी मुद्दे पर समाचार रिपोर्ट या जानकारी को सारांशित करने या अवधारणा को समझाने के लिए पोस्टर का विकास कर सकते हैं। समूहों को किसी नए विषय के आरंभ में मंथन करने या मस्तिष्क में रूपरेखा बनाने के लिए पाँच मिनट देने से आपको इस बारे में बहुत कुछ जानकारी मिलेगी कि उन्हें क्या पहले से पता है, और आपको पाठ को उपयुक्त स्तर पर स्थापित करने में सहायता मिलेगी।
- **विभेदित कार्य:** समूहकार्य विभिन्न उम्रों या दक्षता स्तरों के छात्र–छात्राओं को किसी उपयुक्त काम पर मिलकर काम करने देने का अवसर है। अधिक दक्षता प्राप्त करने वाले काम को समझाने के अवसर से लाभ उठा सकते हैं, जबकि कम दक्षता प्राप्त करने वालों के लिए कक्षा की बनिस्पत समूह में प्रश्न पूछना अधिक आसान हो सकता है, और वे अपने सहपाठियों से सीखेंगे।
- **चर्चा:** छात्र–छात्रा किसी मुद्दे पर विचार करते हैं और एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इसके लिए आपको अपनी ओर से काफी तैयारी करनी होगी ताकि सुनिश्चित हो सके कि विभिन्न विकल्पों पर विचार करने के लिए छात्र–छात्राओं के पास पर्याप्त ज्ञान है, लेकिन चर्चा या विवाद का आयोजन आप और उन के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है।

समूहों का नियोजन करना

चार से आठ के समूह आदर्श होते हैं किंतु यह आपकी कक्षा, भौतिक पर्यावरण और फर्नीचर, तथा आपकी कक्षा की दक्षता और उम्र के दायरे पर निर्भर करेगा। आदर्श रूप से समूह में हर एक के लिए एक दूसरे से मिलना, बिना चिल्लाए बात करना और समूह के परिणाम में योगदान करना आवश्यक होगा।

- तय करें कि आप छात्र–छात्राओं को समूहों में कैसे और क्यों विभाजित करेंगे; उदाहरण के लिए, आप समूहों को मित्रता, रुचि या समान अथवा मिश्रित दक्षता के अनुसार बाँट सकते हैं। भिन्न तरीकों से प्रयोग करें और समीक्षा करें कि प्रत्येक कक्षा के लिए क्या सर्वोत्तम है।
- योजना बनाएं कि आप समूह के सदस्यों को कौन सी भूमिकाएं देंगे (उदाहरण के लिए, नोट लेने वाला, प्रवक्ता, टाइम कीपर या उपकरणों का संग्रहकर्ता) और आप इसे कैसे स्पष्ट करेंगे।

समूहकार्य का प्रबंधन करना

आप अच्छे समूहकार्य के प्रबंधन के लिए दिनचर्याएं और नियम तय कर सकते हैं। जब आप नियमित रूप से समूहकार्य का उपयोग करते हैं, तो छात्र–छात्राओं को पता चल जाएगा कि आप क्या अपेक्षा करते हैं और वे इसे आनंददायक पाएंगे। टीमों और समूहों में काम करने के लाभों की पहचान करने के लिए आरंभ में कक्षा के साथ काम करना एक अच्छा विचार है। आपको चर्चा करनी चाहिए कि समूहकार्य में अच्छा व्यवहार क्या होता है और संभव हो तो 'नियमों' की एक सूची बनाएं जिसे प्रदर्शित किया जा सकता है; उदाहरण के लिए, 'एक दूसरे के लिए सम्मान', 'सुनना', 'एक दूसरे की सहायता करना', 'एक से अधिक विचार को आजमाना', आदि।

समूहकार्य के बारे में स्पष्ट मौखिक अनुदेश देना महत्वपूर्ण है जिसे ब्लैकबोर्ड पर संदर्भ के लिए लिखा भी जा सकता है। आपको:

- अपनी योजना के अनुसार अपने छात्र–छात्राओं को उन समूहों की ओर निर्देशित करना होगा जिनमें वे काम करेंगे। ऐसा आप शायद कक्षा में ऐसे स्थानों को निर्दिष्ट करके कर सकते हैं जहाँ वे काम करेंगे या किसी फर्नीचर या स्कूल के बैगों को हटाने के बारे में अनुदेश देकर कर सकते हैं।
- कार्य के बारे में बहुत स्पष्ट होना और उसे बोर्ड पर लघु अनुदेशों या चित्रों के रूप में लिखना चाहिए। अपने शुरू करने से पहले छात्र–छात्राओं को प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान करें।

पाठ के दौरान, यह देखने और जाँच करने के लिए घूमें कि समूह किस तरह से काम कर रहे हैं। यदि वे कार्य से विचलित हो रहे हैं या अटक रहे हैं तो जहाँ जरूरत हो वहाँ सलाह प्रदान करें।

आप कार्य के दौरान समूहों को बदलना चाह सकते हैं। जब आप समूहकार्य के बारे में आत्मविश्वास महसूस करने लगें तब दो तकनीकें आजमाई जा सकती हैं – वे बड़ी कक्षा को प्रबंधित करते समय खास तौर पर उपयोगी होती हैं:

- **'विशेषज्ञ समूह':** प्रत्येक समूह को एक अलग कार्य दें, जैसे विद्युत उत्पन्न करने के एक तरीके पर शोध करना या किसी नाटक के लिए किरदार विकसित करना। एक उपयुक्त समय के बाद, समूहों को पुनर्गठित करें ताकि प्रत्येक नया समूह सभी मूल समूहों से एक 'विशेषज्ञ' से युक्त हो। फिर उन्हें एक कार्य दें जिसमें सभी विशेषज्ञों के ज्ञान को एकत्र करना होता है, जैसे निश्चय करना कि किस प्रकार का पॉवर स्टेशन बनाना या नाटक का अंश तैयार करना चाहिए।
- **'दूत':** यदि कार्य में कोई चीज बनाना या किसी समस्या को हल करना शामिल है, तो कुछ समय बाद, प्रत्येक समूह से किसी अन्य समूह में एक दूत भेजने को कहें। वे विचारों या समस्या के हलों की तुलना और फिर वापस अपने स्वयं के समूह को सूचित कर सकते हैं। इस प्रकार, समूह एक दूसरे से सीख सकते हैं।

कार्य के अंत में, जो कुछ सीखा गया है उसका सारांश बनाएं और आपको नज़र आई किसी भी गलतफहमी को सुधारें। आप चाहें तो प्रत्येक समूह का प्रतिपुष्टि (फीडबैक) सुन सकते हैं, या केवल एक या दो समूहों से पूछ सकते हैं जिनके पास आपको लगता है कि कुछ अच्छे विचार हैं। छात्र–छात्राओं की रिपोर्ट करने की प्रक्रिया को संक्षिप्त रखें और उन्हें अन्य समूहों के काम पर प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने को प्रोत्साहित करें जिसमें वे पहचान सकते हैं कि क्या अच्छा किया गया था, क्या बात दिलचस्प थी और किस बात को और विकसित किया जा सकता था।

यदि आप अपनी कक्षा में समूहकार्य को अपनाना चाहते हैं तो भी आपको कभी-कभी इसका नियोजन कठिन लग सकता है क्योंकि कुछ छात्र–छात्रा:

- सक्रिय शिक्षण का प्रतिरोध करते हैं और उसमें शामिल नहीं होते
- हावी होने वाली प्रकृति के होते हैं
- अंतर्वैयक्तिक कौशलों की कमी या आत्मविश्वास के अभाव के कारण भाग नहीं लेते।

सीखने के परिणाम कहाँ तक प्राप्त हुए और आपके छात्र–छात्राओं ने कितनी अच्छी तरह से अनुक्रिया की (क्या वे सभी लाभान्वित हुए) इस पर विचार करने के अलावा, समूहकार्य के प्रबंधन में प्रभावी बनने के लिए उपरोक्त सभी बिंदुओं पर विचार करना महत्वपूर्ण होता है। सामूहिक कार्य, संसाधनों, समयों या समूहों की रचना में आप द्वारा किए जा सकने वाले समायोजनों पर सावधानी से विचार करें और उनकी योजना बनाएं।

शोध से पता चला है कि छात्र–छात्राओं की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाने के लिए समूहों में सीखने का हर समय उपयोग करना आवश्यक नहीं है, इसलिए आपको हर पाठ में उसका उपयोग करने के लिए बाध्य महसूस नहीं करना चाहिए। आप चाहें तो समूहकार्य का उपयोग एक पूरक तकनीक के रूप में कर सकते हैं, उदाहरण के लिए विषय परिवर्तन के बीच अंतराल या कक्षा में चर्चा को अकस्मात शुरु करने के साधन के रूप में कर सकते हैं। इसका उपयोग विवाद को हल करने या कक्षा में अनुभवजनित शिक्षण गतिविधियाँ और समस्या का हल करने के अभ्यास शुरू करने या विषयों की समीक्षा करने के लिए भी किया जा सकता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Karadi Tales: http://www.karaditales.com/
- National Book Trust India: http://www.nbtindia.gov.in/
- NCERT textbooks: http://www.ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm
- Teachers of India classroom resources: http://www.teachersofindia.org/en

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Bromley, H. (2000) *Book-based Reading Games*. London: Centre for Literacy in Primary Education.

Bryant, P. and Nunes, T. (eds) (2004) *Handbook of Children's Literacy*. Dordrecht: Kluwer Academic Publishers.

Dombey, H. and Moustafa, M. (1998) *Whole to Part Phonics: How Children Learn to Read and Spell*. London: Centre for Literacy in Primary Education.

Goswami, U. (2010a) 'Phonology, reading and reading difficulties' in Hall, K., Goswami, U., Harrison, C., Ellis, S. and Soler, J. (eds) *Interdisciplinary Perspectives on Learning to Read*. London: Routledge.

Goswami, U. (2010b) 'A psycholinguistic grain size view of reading acquisition across languages' in Brunswick, N., McDougall, S. and Mornay-Davies, P. (eds) *The Role of Orthographies in Reading and Spelling*. Hove: Psychology Press.

Graham, J. and Kelly, A. (2012) *Reading under Control: Teaching Reading in the Primary School*, 3rd edn. London: Routledge.

Hall, K., Goswami, U., Harrison, C., Ellis, S. and Soler, J. (eds) (2010) *Interdisciplinary Perspectives on Learning to Read: Culture, Cognition and Pedagogy*. London: Routledge.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा लाइसेंस के अंतर्गत ही इस प्रोजेक्ट में उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons Licence से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि यह सामग्री अपरिवर्तित रूप से केवल TESS-India प्रोजेक्ट में ही उपयोग की जा सकती है और यह किसी अनुवर्ती OER संस्करणों में उपयोग नहीं की जा सकती। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्त्रोतों का कृतज्ञतारूपी आभार किया जाता है:

चित्र 1: रीडिंग कार्ड 1, अंग्रेज़ी 100, केन्द्रीय अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा संस्थान से रीडिंग कार्ड का उदाहरण: सीआईईएफएल हैदराबाद 2000। (Figure 1 : example of reading card from Reading Card 1, English 100, Central Institute of English and Foreign Languages: CIEFL Hyderabad, 2000.)

चित्र 2: रीडिंग कार्ड्स 100 और 41, अंग्रेज़ी 100, सीआईईएफएल से रीडिंग कार्ड के उदाहरण: सीआईईएफएल हैदराबाद 2000। (Figure 2: Example of reading card from Reading Cards 1000 and 41, English 100, CIEFL Hyderabad, 2000.)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।